



साक्षी

2022-23



साक्षी मलिक राजकीय कन्या महाविद्यालय

मोखरा (रोहतक)

एम.डी.यू. द्वारा एफिलिएटेड

SAKSHI MALIK GOVT. COLLEGE FOR GIRLS

Mokhra (Rohtak)

Affiliated to MDU Rohtak

सन्देश



प्रिय छात्राओं,

आप सब के लिए एक यादगार तोहफा। आपके महाविद्यालय की पत्रिका “साक्षी” का पहला अंक आप सब को समर्पित। इस के सफल संकलन के लिए आप सब बधाई की पात्र हैं। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य आप के विचारों को लेखनी के माध्यम से सब के सामने रखना है। अपनी सरल और सहज बात आप आसान भाषा में पिरो सकती हैं। आपके व्यक्तित्व में सच्चाई होनी आवश्यक है। अपने लक्ष्य के लिए ईमानदार रहे।

हर किसी के पास अलग सामर्थ्य और काबिलियत होती है। पढ़ाई, स्पोर्ट्स, संगीत और वाचन सभी आपके लिए अहम हैं। अपना 100% प्रयास दें। विद्यार्थी जीवन का अच्छी आदतों के साथ आनन्द ले और अपना भविष्य सुदृढ़ चरित्र के साथ उज्ज्वल बनाएँ।

मेरी शुभ कामनाएँ आपके साथ हैं।

प्राचार्या
डॉ. सीमा जैन
साक्षी मलिक राजकीय कन्या महाविद्यालय
मोखरा, रोहतक

BEST ACADEMIC ACHIEVERS



ANITA DEVI

1st Position in Academic



PREETI

2nd Position in Academic



RAVINA

3rd Position in Academic



TAMANNA

4th Position in Academic



SANJU

D/o Sh Jagdish
Selection in Delhi Police

ACHIEVEMENT




NSS



 **Rohtak, HR, India**
Maham, Rohtak, 124022, HR, India
Lat 28°53'36.4531"N, Long
76°25'43.8533"E
02/28/2023 04:41 PM GMT+05:30



 **Rohtak, HR, India**
Maham, Rohtak, 124022, HR, India
Lat 28°53'36.8171"N, Long
76°25'44.9079"E
02/28/2023 04:40 PM GMT+05:30

SPORT ACTIVITIES



CONVOCATION FUNCTION



Editorial Board

(2022-23)

Patron : **Dr. Seema Jain** (Principal)

Editor-in-chief : **Sh. Sandeep Kumar Dangi**, Assistant Professor
Dept. of Hindi



Sections

Hindi

Computer

History

English

Pol. Science

Geography

Staff Editors

Sh. Sandeep Kumar Dangi

Sh. Krishan Yadav

Sh. Ishwar Singh

Sh. Suresh Kumar

Mrs. Sunita Dhankhar

Dr. Vinod Kumar

Student Editors

Ms. Tushika

Ms. Ishu

Ms. Mansi

Ms. Isha

Ms. Tamana

Ms. Anjali

सम्पादकीय



श्री संदीप कुमार
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग

इस पत्रिका के माध्यम से संदेश दिया जाता है कि इस महाविद्यालय में छात्राओं का सर्वांगीण विकास के लिए ऐसे कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिससे छात्राएं अपने शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त कर सकें। सन् 2014 में तत्कालीन सरकार द्वारा ग्रामीण छात्राओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए राजकीय महिला महाविद्यालय मोरबरा की स्थापना की थी। परन्तु 2016 में साक्षी मलिक ने ओलम्पिक कुश्ती खेल में कांस्य पदक जीतने पर उसके सम्मान व आदर्श के रूप में इस महाविद्यालय का नाम बदलकर “साक्षी मलिक राजकीय कन्या महाविद्यालय मोरबरा (रोहतक)” रख दिया गया। वर्ष 2018 में इस महाविद्यालय का भवन बनकर तैयार हुआ। यहाँ कला संकाय के प्रमुख विषय हिन्दी, अंग्रेजी, भूगोल, राजनीति शास्त्र और इतिहास आदि है। प्रत्येक क्षेत्र में छात्राओं के ढाखिले के लिए कुल 160 सीट है। छात्राओं के भविष्य को सुदृढ़ बनाने के लिए अभिभावकों, प्राध्यापकों, छात्राओं और महाविद्यालय का मजबूत होना आवश्यक है। हमारा निरंतर प्रयास रहा है कि छात्राओं को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जो उनका चरित्र निर्माण करे, मानसिक शक्ति बढ़ाए, बुद्धि विकसित करें और उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर जीवन को सही ढंग से जीना सिखाए।



साक्षी

2022-23



हिन्दी विभाग

सम्पादक :

श्री संदीप कुमार दांगी

सहायक प्रोफेसर – हिन्दी विभाग

विद्यार्थी सम्पादक :

तुषिका



अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखिका/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	प्रेरणा	श्री संदीप कुमार दांगी	5
2.	संघर्ष	श्री संदीप कुमार दांगी	6
3.	सपनों में रख आस्था	विशाखा	8
4.	लक्ष्य	विशाखा	8
5.	संघर्ष	विशाखा	8
6.	सफलता	ज्योति	9
8.	हिम्मत रखना	आरती	9
7.	सफर	ज्योति	9
9.	वक्त की कीमत	रेनू	10
10.	कविता	अंकिता	10
11.	प्रकृति पर कविता	मधु	10
12.	कविता	शीतल दुग्गल	11
13.	माँ	मधु	11
14.	संघर्ष पर कविता	अंकिता	12
15.	शायरी	मनिषा	12
16.	मैंने दहेज नहीं मांगा	पूजा	13
17.	दोहा छन्द	वर्षा खरब	14
18.	जिन्दगी	अंकिता	14
19.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अनमोल वीरांगनाएँ	श्री ईश्वर सिंह	15
20.	कंप्यूटर का इतिहास	प्रियंका	16
22.	इंटरनेट तथा उसके एप्लीकेशन एरिया	अंजली	17
23.	साहित्य, संस्कृति व योग	श्री संदीप कुमार	18
21.	इंटरनेट का इतिहास	सोनिया	17

ENGLISH SECTION

1.	Ctrl + A to Z Mostly Used Shortcut Keys	Muskan	24
2.	Don't Trust	Jyoti	24
3.	Life	Aarti	24
4.	Good Things	Jyoti	24

प्रेरणा

श्री संदीप कुमार दांगी

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग

मार्टिन लूथर किंग ने एक बार कहा था, “अगर तुम उड़ नहीं सकते हो तो दौड़ो, अगर दौड़ नहीं सकते हो तो चलो, अगर तुम चल नहीं सकते हो तो रेंगो, पर निरंतर आगे बढ़ते रहो। अपनी सोच और दिशा बदलो सफलता तुम्हारा स्वागत करेगी।” निरंतर चलते रहना, आगे बढ़ते रहना, प्रगति करते रहना ही जीवन का मूल सिद्धांत है। ‘जीवन चलने का नामख चलते रहो सुबहो शाम’ – गीत के सहज-सरल शब्दों में भी यही संदेश दिया गया है। संसार में जड़ और स्थिर वस्तु का अस्तित्व नहीं रहता। संजीव जगत् सदा चलायमान रहता है। हवाएँ चलती हैं, नदियों चलती हैं, सांसे चलती हैं, चंद्रमा चलता है और धरती भी चलती है। चलने में सक्षम होते हुए भी जो नहीं चलते उनका अस्तित्व मिट जाता है, प्रकृति उन्हें अपने परिपथ से बाहर निकाल देती है। सो हमें भी अपने लक्ष्य की ओर निरंतर चलते रहना चाहिए। हमारी चाल धीमी हो सकती है पर कदम रुकने नहीं चाहिए। चलना जीवन है तो रुकना मौत। ये कदम किसी मुकाम पे जो जम गए तो कुछ नहीं। यदि कारवां गुजर गया तो गुबार देखते रह जाओगे।

रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हों, तो भी एक अच्छा जूता पहन कर चला जा सकता है। किंतु एक अच्छे जूते के अंदर एक भी कंकड़ घुस जाए तो एक अच्छी सड़क पर भी कुछ कदम चलना भी मुश्किल हो जाता है, अर्थात् हम बाहर की चुनौतियों से नहीं अपने भीतर की कमजोरियों से हारते हैं। इसलिए अपनी कमजोरियों को अपनी ताकत बनाओ। जीवन के प्रत्येक कदम पर कुछ न कुछ सीखते रहो। इसी में सफलता निहित है। जीवन में कठिनाइयाँ आ सकती हैं। समस्याएँ आ सकती हैं निराशा हो सकती है, पर इन सब का समाधान निरंतर चलते रहने में ही है। जिस प्रकार छोटे किन्तु तेज कदमों से चलना हमारी चाल को त्वरित करता है, उसी प्रकार थोड़ा किन्तु निरंतर कार्य हमारी सफलता को सुनिश्चित करता है। कछुए और खरगोश की कहानी हमारे सामने है। इसलिए सदा चलते रहिए, आगे बढ़ते रहिए, मेहनत करते रहिए, क्योंकि यदि ...

तू ना चलेगा तो चल देंगी राहें,
मंजिल को तरसेगी तेरी निगाहें।

इसलिए – तुझको चलना होगा ! तुझको चलना होगा !!

प्रेमी ढूँढत मैं फिरों, प्रेमी मिले न कोइ ।

प्रेमी की प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ ।।

भावार्थ : कबीर कहते हैं कि मैं प्रेमी अर्थात् प्रभु-भक्त को ढूँढ रहा था, परन्तु अपने अहंकार के कारण गुझे कोई प्रभु-भक्त नहीं मिला। लेकिन जब एक प्रभु-भक्त से दूसरा प्रभु-भक्त मिलता है तो हृदय में रही सारी विषरूपी बुराइयाँ अमृतरूपी अच्छाइयों में बदल जाती हैं।



संघर्ष

श्री संदीप कुमार दांगी

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग

संघर्ष के मार्ग में अकेले ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपकी सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ इच्छा-शक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। दो महत्वपूर्ण तथ्य स्मरणीय हैं- प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। एक अध्यापक ने अध्ययन व पठन छोड़ने वालो अपने छात्राओं को यह संदेश दिया था कि तुम्हें जीवन में सफल होने के लिए समस्याओ से संघर्ष करने का अभ्यास करना होगा। हम कोई भी कार्य करें, सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने का संकल्प लेकर चलना होगा। सफलता हमें कभी निराश नहीं करेगी समस्त ग्रंथो और महापुरुषों के अनुभवो का निष्कर्ष यही है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना अहितकर है, मानव धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है। जागिए, उठिए, दृढ़ संकल्प और उत्साह एवं साहस के साथ संघर्ष रूपी विजय रथ पर चढ़िए और अपने जीवन के विकास की बाधाओं रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए। जिस ने संसार रूपी सागर की ऊँची उफनती लहरो को चुनौती देना सीख लिया है, सफलता की अनुपम मणियाँ उसी के हाथो में आती हैं। जो डरकर किनारे पर रूक गया, वह जीवन का दाँव हार गया। कबीरदास ने भी ठीक ही कहा है, “ जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।” गहरे पानी बैठकर खोजना ही तो संघर्ष अथवा चुनौतियों को स्वीकारना है। कर्म की आँच में तपकर ही तो मनुष्य देवता समान बन सकता है। आलसी व्यक्ति तो धरती का बोझ होता है। मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता पड़ता है। ...

किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए,
सो सब हमें निज पूर्वजों से ज्ञात करना चाहिए।
पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए।

जो जी से हँसता है,
वह कभी बुरा नहीं होता।
अपने मित्र को हँसाओ,
वह अधिक प्रसन्न होगा।
शत्रुओं को हँसाओ
तुमसे कम घृणा करेगा।
एक अनजान को हँसाओ,



तुम पर भरोसा करेगा
उदास को हँसाओं
उसका दुख घटेगा।
निराशा को हँसाओ,
उसकी आशा बढ़ेगी।
एक बूढ़े को हँसाओ
अपने को जवान
समझने लगेगा।

पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी उँचे बन जावो-2
सागर कहता है लहराकर मन में गहराई लाओ-2
समझ रहे हो क्या कहती है उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो भर लो आने मन में मीठी मीठी मृदुल उमंग।।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो कितना ही हो सिर पर भार ।
नभ कहता है फैलो इतना ढक लो तुम सारा संसार।।

**काक चेष्टा, बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिनः पेच लक्षणम्॥**

कोए के जैसी चेष्टा अर्थात प्रयत्न बगुले के जैसा ध्यान अर्थात एकाग्रता, कुत्ते के जैसी नींद अर्थात कम सोना और सचेत होकर सोना, कम खाने वाला घर को त्यागने वाला अर्थात घर के मामलों से दूर रहने वाला, ये विद्यार्थी के पांच लक्षण हैं।

**तरूवर फल नहि खात है सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित संपति संचहि सुजान॥**

प्रकृति हमें परोपकार का आदर्श स्वरूप समझाती आ रही है। वृक्ष अपने फलों को स्वयं नहीं खाते, चाहे उनको डेला मारे या टहनी तोड़ें फिर भी दूसरों के ही काम आते हैं। उसी प्रकार तालाब अपना जल स्वयं नहीं पीते। बल्कि उसके पानी से मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष और खेतों की प्यास बुझा करती है। यही बात सज्जनों पर भी होती है। वे भी केवल परोपकार के लिए संपत्ति का संचय किया करते हैं।

सपनों में रख आस्था

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा
 त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा।
 गलती कर ना घबरा,
 गिरकर फिर हो जा खडा।।
 समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
 चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।
 रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
 जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।
 जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर,
 करता रह कर्म मगर साथ मैं खुद की इबाबत भी कर।
 फिर देख किस्मत क्या क्या रंग दिखलाए गी।
 तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी।।

संघर्ष

सपना बडा है संघर्ष भी बडा होगा
 जीतेगा वही जो मैदान में खड़ा होगा
 दिन रात एक करनी होगी
 तब जाकर सफलता मिलेगी
 अगर जिंदगी में कामयाब होना है
 और मंजिल को पाना है
 तो उठो जागो दौड़ो और
 एक नई मार्ग की खोज करो।
 जिस पत्थर छेनी और हथौड़ी
 की मार से दर्द होता है वह कभी
 मूरत नहीं बन सकता और जो
 व्यक्ति चुनौतियों से दूर भागता है
 वह कभी सफल नहीं बन सकता।

विशाखा

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. 120131002013

लक्ष्य

कृछ करना है, तो डटकर चल।
 थोडा दुनिया से हटकर चल।
 लीक पर तो सभी चल लेते है।
 कभी इतिहास को पलटकर चल।
 बिना काम के मुकाम कैसा?
 बिना मेहनत के दाम कैसा?
 जब तक ना हासिल हो मंजिल
 तो राह में आराम कैसा?
 अर्जुन सा, निशान रख।
 मन में, ना कोई बहाना रख व
 लक्ष्य सामने है, बस उसी पे
 अपना ठिकाना रख।।
 सोच मत साकार कर।।
 अपने कर्मों से प्यार कर।
 मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
 किसी ओर का न इंतजार कर
 जो चले थे अकेले उनके पीछे आज
 मेले है जो करते रहे इंतजार उनकी
 जिंदगी में आज भी झमेले है।।

हस्ती चढ़िए ज्ञान को, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, पूँकन दे झख मारि।

भावार्थ: कबीर कहते हैं कि तुम ज्ञानरूपी हाथी पर सहजरूपी कालीन बिछाकर अपने मार्ग पर निश्चित होकर चलते रहो। यह संसार कुत्ते के समान है जो हाथी को चलते देखकर अकारण भौंकता रहता है। कहने का आशय है कि ज्ञान-प्राप्ति में लीन साधक को देखकर संसार के लोग उसकी निंदा करते रहते हैं, परन्तु उसे संसार वालों की निंदा की परवाह नहीं करनी चाहिए।

सफलता

ज्योति

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002052

मंजिल उन्ही को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है,
पंखों से कुछ नहीं होता,
हौसलों से उड़ान होती है।

जो 'हो गया' उसे सोचा नहीं करते,
जो 'मिल गया' उसे खोया नहीं करते,
सफलता भी उन्हें हासिल होती है
जो 'वक्त और हालात' पर रोया नहीं करते।

जिंदगी में इंतजार नहीं कोशिश
कीजिए जनाब, क्योंकि इंतजार करने
वालों को उतना ही मिलता है
जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

पखापखी के कारनँ, सब जग रहा भुलान।

निरपन होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।

भावार्थ: पक्ष और विपक्ष के चक्कर में पड़कर लोग जाति, धर्म और संप्रदाय में बँट गए हैं। वे अपने पक्ष को श्रेष्ठ मानते हैं और दूसरे की निंदा करते हैं। इसी सांसारिक पचड़े में पड़कर वे अपने जीवन के असली उद्देश्य से भटक गए हैं। कबीर कहते हैं कि जो धर्म-संप्रदाय के चक्कर में पड़े बिना प्रभु-भक्ति करते हैं, वास्तव में वे संत हैं, ज्ञानी हैं।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होई।

सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।

भावार्थ: कबीर कहते हैं कि ऊँचे कुल में जन्म लेने से कोई ऊँचा नहीं कहलाता। ऊँचा अर्थात् बड़ा बनने के लिए उसे अच्छे कर्म करने ही पड़ते हैं। उसमें कुल की कोई भूमिका नहीं होती है। दृष्टान्त देते हुए वे कहते हैं कि जिस प्रकार शराब यदि सोने के पात्र में भरी हो तो सज्जनों के लिए पेय नहीं बन जाती है। सज्जन उसकी निन्दा ही करते हैं। ठीक उसी तरह ऊँचे कुल में जन्म लेकर यदि व्यक्ति नीच कर्म करता है तो वह निन्दा का ही पात्र है।

हिम्मत रखना

आरती

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002030

मुश्किल नहीं कुद इस दुनिया में,
तू हिम्मत करके तो देख
ख्वाब बदलेंगे हकीकत में
तू मेहनत तो करके देख।

मंजिल पाना तो बहुत
दूर की बात है,
गरूर में रहोगे, तो रास्ते
भी न देख पायोगे।

हिम्मत मत खोना अभी बहुत आगे जाना हैं
जिन्होंने कहा था तेरे बस का नहीं
उन्हें भी कर के दिखाना हैं।

जिन्दगीं जिना आसान नहीं होता,
बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता,
जब तक न पड़े हथौड़े कि चोट,
तब तक पत्थर भी भगवान नहीं होता।

सफर

ज्योति

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002002

ना थके अभी पैर
ना अभी हिम्मत हारी है
हौसला हैं जिंदगी में कुछ कर दिखाने का
इसलिए अभी भी सफर जारी हैं।

हद ए शहर से निकली तो
गाओं गाओं चली,
कुछ यादें मेरे संग पांव-पांव चली,
सफर जो धूप का किया तो तजुर्बा हुआ,
वो जिन्दगी ही क्या जो छाओ-छाओ चली।

वक्त की कीमत

रेनू

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002021

वक्त से लड़कर जो नसीब बदल दें,
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दें,
कल क्या होगा कभी मत सोचो,
क्या पता कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल लें।

चाह रखने वाले मंजिलों की ताकते नही,
बढ़कर थाम लिया करते हैं।
जिनके हाथों में हो वक्त की कलम,
अपनी किस्मत खुद लिखा करते हैं।

मुश्किलों से भाग जाना आसान होता है
हर पहलू जिंदगी का इम्तिहान होता है,
डरने वालों को मिलता नहीं कुछ जिंदगी में
लड़ने वालों के कदमों में जहान होता है।

सपना एक देखोगे मुश्किलें
हजार आएंगी
लेकिन वो मंजर बड़ा खूबसूरत होगा
जब कामयाबी शोर मचाएगी।

कविता

अंकिता

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002024

कभी सख्त पेड़ तो कभी
फूलों को डाली बन जाते हो
कभी खुद एक खेल तो कभी
मेरे लिए खिलाड़ी बन जाते हो

प्यार करते हो बहुत मुझसे
पर कभी नहीं जताते हो।

कैसे कह दूं मैं तुम्हें
इस दिल से धन्यवाद मेरे पापा
तुम वही हो ना जो खुद
भूखे रहकर मेरे दूध की
प्याली बन जाते हो

शाम को थककर
जब तुम घर आते हो
हंसी से हमारी
अपने सारे दर्द भूल जाते हो...!

प्रकृति पर कविता

मधु

बी.ए. तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002029

हरी भरी यह हमारी धरती,
हर मन को अपनी सुंदरता से हरती,
पेड़-पौधे, नंदिया और झरने,
हरते हैं मन को यह सबके
पेड़ हमें देता फल और मधु छाया,
विशाल है इसका रूप, हर दिल को है यह भाया,
अपने साथ है, रंगो भरी खुशियां ये लाया

फूलों की अपरम्पार खुशबू,
मन को है सब को भाये,
हर दिल इसको सुंग के है,
खुशहाल हो जाए
हरी भरी यह हमारी धरती
हर मन को अपनी सुंदरता से हरती।



कविता

शीतल दुग्गल

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 1211311002051

किसी से कुछ कहते नहीं है
अपनी इच्छाओं अपने जज्बातों को
अपने अंदर दबाकर रखते है,
क्या कहे पापा होते ही ऐसे है...

ना ही अपनी चिंता अपनी परेशानियों में
किसी को शामिल करते है,
ना ही अपना दुःख दर्द
किसी को बताते है,
क्या कहे पापा होते ही ऐसे है...

बच्चों को डाटने के बाद भी,
खुद दुःखी हो जाते है,
अपनी डाँट में भी अपने प्यार को छुपाते है,
हमारी गलती होने पर भी
हमें प्यार से समझाते है,
क्या कहे पापा होते ही ऐसे है...

माँ को कभी
प्यार और ममता का सागर बताते है,
पापा भी तो अपने बच्चों से,
उतना ही प्यार करते है,
पर फर्क सिर्फ इतना है
कि जताते नहीं है,
क्या कहें पापा होते ही ऐसे है...

काम से थके होने के बावजूद भी
अपनी सारी थकान को छुपाते है,
हम सब के साथ हँसते - मुस्कराते है,
क्या कहे पापा होते ही ऐसे है...

सबकी इच्छाओं को पूरा करते है,
पर अपनी कभी भी कोई भी इच्छा
पूरी नहीं करते हैं,

सबकी खुशियों का ध्यान रखते है,
पर खुद दुसरो की खुशियों में ही
खुश हो जाते है,

सबकी जरूरतों को पूरा करते-करते
अपनी जरूरतों को भूल जाते है,
क्या कहे पापा होते ही ऐसे हैं...

माँ मेरी दुनिया है, पापा मेरे जहान है
माँ मेरी जमीन है, तो पापा मेरे आसमान है.

माँ

मधु

बी.ए. तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002029

अगर हम शब्द है तो, माँ पुरी भाषा है
अगर हम उम्मिद है तो, माँ
पुरी अभिलाषा है।

मन अलग है, लेकिन प्रेम तो एक है
माँ कहु या भगवान बात तो एक है।

कितना भी लिखे उनके लिए उनके लिए
बहुत कम है,
सच तो ये है कि माँ है
तो हम है।

मांग लू यह दुआ कि फिर यही
जहाँ मिले,
फिर वही गोद, मिले फिर
वही माँ मिले।

संघर्ष पर कविता

अंकिता

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002024

तूफान में भी जलता रहे वह दिया बनो,
बरसात में सैलाब न लाए वह दरिया बनो,
क्योंकि सहनशीलता से विकास होता है
और उग्रवादिता से विनाश होता है।

जीवन फूलों का बिस्तर नहीं कांटों का सफर है,
अपनी गाड़ी में ब्रेक लगाए चलें टेढ़ी-मेढ़ी डगर है,
इस सफर में हर कोई कभी सुख तो कभी दुख ढौता है
कभी कोई हसता है तो कभी कोई रोता है।

तूफान में भी जलता रहे वह दिया बनो
बरसात ये सैलाब न लाए वह दरिया बनो,
क्योंकि सहनशीलता से विकास होता है,
और उग्रवादिता से विनाश होता है।

गम ये तुम टुट न जाना, खुशी में बह न जाना,
हर हालात में हंसते रहना, हंस के मुश्किल को भगाना,
यहां हर कोई अच्छे लम्हों को पिरोता है,
और बुरे दिनों में अपना तकिया भिगोता है।

तूफान में भी जलता रहे वह दिया बनो,
बरसात में सैलाब न लाए वह दरिया बनो,
क्योंकि सहनशीलता से विकास होता है,
और उग्रवादिता से विनाश होता है।

अगर मिल गई हो मंजिल तो खुद को रूकने ना देना,
खुद को अपडेट करते रहना, अपनी एनर्जी ना खोना,
क्योंकि अपडेट से मन आलस को खोता है,
और पोजिटिव एनर्जी से खुद को सजोता है।

तूफान में भी जलता रहे वह दिया बनो,
बरसात में सैलाब न लाए वह दरिया बनो,
क्योंकि सहनशीलता से विकास होता है
और उग्रवादिता से विनाश होता है।

एक पल को रूक कर अपने अतीत को देखो,
जिसमें तुम कितने उत्साही थे मंजिल पाने को,
खोना ना कभी खुद पे जो भरोसा है,
डटे रहो ग़र बहती हवा का झोका है।

तूफान में भी जलता रहे वह दिया बनो,
बरसात में सैलाब न लाए वह दरिया बनो,
क्योंकि सहनशीलता से विकास होता है
और उग्रवादिता से विनाश होता है।

शायरी

मनिषा

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002031

छोटी सी है जिन्दगी, हर बात में खुश रहो....

जो चेहरा पास न हो, उसकी आवाज में खुश रहो
कोई रूठा है आप से, उसके अंदाज में खुश रहो
कल किसने देखा है, अपने आज में खुश रहो।

बेहतर से बेहतर की तलाश करो,
मिल जाए नदी तो समंदर कि तलाश करो,
टूट जाता है शीशा पत्थर कि चोट से
टूट जाए पत्थर ऐसा शीशा तलाश करो।

मैंने दहेज नहीं मांगा

मैंने दहेज नहीं मांगा
 साहब में थाने नहीं आऊंगा
 अपने इस घर से बाहर नहीं जाऊंगा
 माना पत्नी से थोड़ा मन-मुटाव था,
 सोच में अंतर और विचारों में खिचाव था,
 पर यकीन मानिए साहब,
 “मैंने दहेज नहीं मांगा”
 मानता हूँ कानून आज पत्नी के पास है,
 महिलाओं का समाज में हो रहा विकास है,
 चाहत मेरी भी बस ये थी
 कि माँ बाप का सम्मान हो
 उन्हें भी समझे माता पिता न कभी उनका अपमान हो,
 पर अब क्या फायदा, जब टूट ही गया
 हर रिश्तों का धागा
 यकीन मानिए साहब, मैंने दहेज नहीं मांगा
 परिवार के साथ रहना इसे पसंद नहीं है
 कहती है कि यहां कोई आनंद नहीं है
 मुझे ले चलो इस घर से दूर,
 किसी किराए के आशियाने में,
 कुछ नहीं रखा माँ बाप पर प्यार बरसाने में
 हा छोड़ दो, छोड़ दो इस माँ बाप के प्यार को
 नहीं माने तो याद रखोगे मेरी मार को
 फिर शुरू हुआ वाद विवाद माँ बाप से अलग होने का
 शायद समय आ गया था,
 चैन और शुकुन खोने का
 एक दिन मैंने साफ, पत्नी को मना कर दिया,
 न रहूँगा माँ बाप के बिना,
 ये उसके दिमाग में भर दिया
 फिर मुझसे लडकर मोहतरमा
 मायके जा पहुंची
 2 दिन बाद ही पत्नी के घर से,
 मुझे धमकी आ पहुंची,

पूजा

बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

रोल नं. - 1211311002017

माँ बाप से हो जा अलग नहीं सबक सिखा देंगे
 क्या होता है दहेज कानून
 तुझे इसका असर दिखा देंगे
 परिणाम जानते हुए भी मैंने,
 उसकी हर धमकी को गले में टांगा
 यकीन मानीए साहब,
 मैंने दहेज नहीं मांगा।
 जो कहा था बीवी ने,
 आखिरकार कर दिखाया,
 झगडा किसी और बात पर था,
 उसने दहेज का नाटक रचाया
 फिर पुलिस थाने में मुझे
 एक दिन फोन आया
 क्यों बे पत्नी से दहेज मांगता है,
 ये कहके मुझे धमकाया
 माता पिता, भाई बहन जीजा
 सभी के रिपोर्ट में नाम थे,
 घर में सब हैरान, सब परेशान थे,
 अब अकेले बैठकर सोचता हूँ,
 वो क्यों जिंदगी में आई थी,
 मैंने भी तो उसके प्रति हर जिम्मेदारी निभाई थी
 आखिरकार तमका मिला हमें,
 दहेज लोभी होने का
 कोई फायदा न हुआ मीठे-2 सपने संजोने का
 बुलाने पर थाने आया हूँ,
 छुपकर कहीं नहीं भागा,
 यकीन मानीए साहब,
 मैंने दहेज नहीं मांगा।

दोहा छन्द

वर्षा खरब

बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

रोल नं. - 1211311002031

मन से बुरे ख्यालों की, जब गिरती चट्टान,
तब जाकर पावन बने, इस जग में इंसान ।।
प्रेम गली की रीत का, समझो कुछ तो भेद,
किया छलावा गर कभी, बने प्रीत में छेद ।।
राधा प्यारी रो रही, छूट गया जो साथ,
तन्हाई भाती नहीं, अब तो आओ नाथ ।।
जाने कब किस मोड़ पर, ले आए तकदीर,
बाधाओं की आ पड़े, पाँवों में जंजीर ।।
नहीं जगत में कृष्ण-सा, कोई होगा मीत,
दीन सुदामा से निभी, उसकी निश्छल प्रीत ।।
पहले नेता मांगते, घर-घर जाकर वोट,
जनता के अरमान का, फिर देते गल घोट ।।
श्याम गए ब्रज छोडकर, राधा हुई अधीर,
अखियों में उसके दिखे, अब तो बहता नीर ।।
नित्य नशे में डूबकर, घटा रहा निज मान,
इस हैवानी सोच से, ऊपर उठ इंसान ।।
झूठ सदा ही हारती, सच की होती जीत,
झूठे का होता नहीं, जग में कोई मीत ।।

जिन्दगी

मनिषा

बी.ए. (तृतीय वर्ष)

रोल नं. - 120131002031

जो मुस्कुरा रहा है, उसे दर्द ने पाला होगा
जो चल रहा है, उसके पांव में छाला होगा ।
बिना संघर्ष के इंसान चमक नहीं सकता, यारों
जो जलेगा उसी दिये में तो, उजाला होगा ।
उदास होने के लिए उम्र पडी है,
नजर उठाओ सामने जिंदगी खड़ी है ।
अपनी हँसी को होंठों से न जाने देना
क्योंकि आपकी मुस्कुराहट के पीछे दुनिया पड़ी है ।
सूरज से जलना सीखो
अंधेरे से पल-पल लड़ना सीखों
लाख अंधेरा क्यों ना हो सामने
उन अंधेरो में चलना सीखो
क्या हुआ जो थम गये तुम
दुख के पीड़ा से जम गये
उन कठिनाईयों में ही पलना सीखो
होगा दूर अंधेरा जीवन से
कमल हो तुम कीचड को भी
बदन में मलना सीखों ।

मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में ।

ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।

ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में ।

खोजी होय तो तुरते मिलिहों, पल भर की तालास में ।

कहैं कबीर सुनौ भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ।।

भावार्थ : मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए तरह-तरह के क्रिया-कर्म करता है, परन्तु उसे ईश्वर के दर्शन नहीं होते हैं। कबीर के अनुसार स्वयं निराकार ब्रह्म मनुष्य से कहते हैं कि हे मनुष्य ! तुम मुझे ढूँढने के लिए कहाँ-कहाँ भटक रहे हो। मैं किसी मंदिरमस्जिद में तुम्हें नहीं मिलूँगा, और न किसी तीर्थस्थान पर। मैं किसी बाह्याडंबर से भी नहीं मिल सकता। योगी और बैरागी बनकर भी तुम मुझे नहीं पा सकते हो। जो मुझे सच्चे मन से खोजता है, उसे मैं तुरंत मिल जाता हूँ क्योंकि मैं तो प्रत्येक प्राणी की हर साँस में बसा हूँ। अतः अन्यत्र भटकने के बदले अपने मन में खोजो ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अनमोल वीरांगनाएँ

श्री ईश्वर सिंह

सहायक प्रोफेसर, इतिहास

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई केवल पुरुषों की भागीदारी से ही विजित नहीं की गई बल्कि इस महायज्ञ में अनेक भारतीय महिलाओं की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय महिलाओं ने कंधे से कंधा मिलाकर पुरुषों का साथ दिया। इनमें से कुछ नायिकाओं का वर्णन निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

प्रसिद्ध भारतीय महिला क्रांतिकारी कनकलता का जन्म 26 मई, 1926 को असम के बरंगावड़ी गाँव में हुआ था। 20 सितंबर, 1942 को असम के धारांग जिले के गोहोपुर गाँव में स्थानीय कांग्रेस पार्टी के सदस्यों ने प्रातः 10 बजे थाने पर ध्वज फहराने का संकल्प लिया। थाने के बाहर थानेदार सेकड़ो सिपाहियों के साथ बंदूके ताने खड़ा था। जिसे देखकर कुछ सत्याग्रहियों में घबराहट दिखाई दी। कनकलता ने उन्हें उत्साहित करते हुए इन्हे ललकारा और कहा, भाईयों और बहनों माँ के दूध को लाज मत लगाना। आगे बढ़ो और काट डालो भारत माँ की गुलामी की बेड़ियों को। विदेशी शासन का प्रतीक युनियन जैक उतार फैंकों तथा फहरा दो अपना प्यारा तिरंगा। कनकलता की यह जोशीली ललकार सुनकर सब सत्याग्रहियों में जोश भर आया और कहने लगे, “भारत माता के उद्धार के लिए हम अपने प्राणों की बाजी लगा देंगे।” जब कनकलता तिरंगा फहराने के लिए आगे बढ़ी तो थानेदार क्रोधित होकर बोला, “थाने के अन्दर धुसने का दुस्साहस मत करना वरना भून दिए जाओगे।” कनकलता ने जोरदार उत्तर दिया, “हम थाने पर तिरंगा फहराकर ही वापस जाँएंगे। जब कनकलता ने कदम आगे बढ़ाया तभी धाँय की आवाज सुनाई पड़ी और एक गोली कनकलता के सीने से पार हो गई। कनकलता का बलिदान काम आया और थाने पर तिरंगा फहरा दिया गया।

“नही देश से प्यार जिन्हे वे मानव नहीं वाहन हैं।

हाड़ मांस के दो पगवाले प्राणों के वाहन है।”

बीनादास का जन्म 24 अगस्त, 1913 को बंगाल प्रान्त के कृष्णनगर में हुआ था। बचपन से ही वह एक प्रतिभाशाली छात्रा थी। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तो इसका विरोध करने के लिए अपनी कुछ अन्य साथियों का साथ लेकर कॉलेज के गेट पर धरना दिया। 6 फरवरी 1932 को जब बीनादास अपने कॉलेज के दीक्षांत समारोह में अपनी बी.ए. की डिग्री लेने वाली थी और गवर्नर जैक्सन स्टेनले समारोह में अपना भाषण दे रहे थे, बीनादास धीरे से उठी और तेज कदमों से चलकर गवर्नर के सामने पहुँची और गवर्नर पर गोली चला दिया गवर्नर बुरी तरह काप उठा। बीनादास का निशाना चुक गया और गवर्नर बाल-बाल बच गया। उनको बन्दी बना लिया गया। उन पर कठोर मुकदमा चलाकर उको 9 वर्ष का कठोर कारावास का दंड सुनाया गया। अदालत में बीनादास ने जो तीन पृष्ठों के अपने लिखित बयान में जो कुछ भी कहा वह ऐतिहासिक रिकॉर्ड था। उसने कहा, “मातृभूमि के प्रति प्रेरित होकर मैंने गोली चलाई है। विदेशी सरकार के अत्याचारों के नीचे कहराते हुए भारत में जीना भी क्या जीना है। बल्कि इसके बदले में अपना विरोध प्रकट करके बलिदान देना ही अच्छा है। भारत की बेटी क्या इतना भी नहीं कर सकती।”

प्रीतीलता वादेदार का जन्म चटगांव के एक निर्धन परिवार में 1911 में हुआ था। इनके पिता जंगवंधु नगरपालिका में 50 रु

प्रतिमाह पर सर्विस करते थे। वह बहुत ही कुशाग्र बुद्धि की थी। वह शिक्षा के साथ-साथ लाठी और तलवार चलाने की ट्रेनिंग प्राप्त करती रही। वह प्रसिद्ध क्रांतिकारी सूर्यसेन से काफी प्रभावित हुई और वह उसके दल की प्रमुख सदस्या बन गई। 24 सितंबर, 1932 को प्रीतिलता ने पुरुष वेश धारण करके अपने दल के साथ 9:00 बजे यूरोपियन क्लब पर आक्रमण कर दिया। इसमें एक महिला की मृत्यु हो गई और 13 अंग्रेज भी घायल हो गए। स्वयं प्रीतिलता भी घायल हो गई। उसके जख्मों से निरंतर रक्त बह रहा था। उसने अपने साथियों से कहा “मैं अब कुछ ही समय की मेहमान हूँ। आप मेरी चिन्ता न करे और यहाँ से शीघ्रातिशीघ्र चले जाएँ। साथियों के विदा लेने के साथ ही इस दिलेर, साहसी और आदर्श नारी ने विष की पुड़ियाँ अपनी जेब से निकाली और भारत माता की आराधना करते हुए प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन समाप्त कर लिया। उस समय उनकी आयु केवल 21 वर्ष की थी।

“जब से सुना है मरने का नाम जिदंगी है
सिर पर कफन बाँधे कातिल को ढूँढ़ते है।”

कंप्यूटर का इतिहास

प्रियंका

बी.ए. प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक 1221311002017

Computer नाम की उत्पत्ति English भाषा में Computer Word से हुई थी। Compute शब्द का अर्थ गणना करना होता है। कंप्यूटर का अविष्कार गणितय गणनाओं की पूर्ति के लिए किया गया था। हम सभी जानते हैं कि कंप्यूटर के जनक चार्ल्स बैबेज को कहा जाता है क्योंकि इन्होंने सन् 1822 ई. में एक शक्तिशाली मशीन की रूपरेखा तैयार की, जिसका नाम एनालिटिकल इंजन (Analytical Engine) रखा था।

Analytical Engine नाम का कंप्यूटर ही आज के आधुनिक कंप्यूटर का आधार बना है। इसीलिए चार्ल्स बैबेज को कंप्यूटर के जनक या कंप्यूटर के पिता कहा जाता है। चार्ल्स बैबेज ने ही सबसे पहले Digital Computer बनाया। उन्होंने 1937 में स्वचालित कंप्यूटर की परिकल्पना की, जिसमें कृत्रिम स्मृति (Artificial Intelligence) तथा प्रोग्राम के अनुरूप गणना करने की क्षमता हो।

सर्वप्रथम कंप्यूटर में प्रोसेसिंग के लिए वैक्यूम ट्यूब का स्तेमाल होता था जिसको बाद में बड़ा आकर होने तथा ज्यादा गर्मी उत्पन्न करने के कारण ट्रांजिस्टर के साथ बदल दिया गया। वर्तमान समय में कंप्यूटर में प्रोसेसिंग के लिए माइक्रोप्रोसेसर चिप का इस्तेमाल किया जाता है।

माइक्रोप्रोसेसर चिप ही कंप्यूटर का मस्तिष्क होता है। कंप्यूटर में होने वाला सारा काम माइक्रोप्रोसेसर चिप पर निर्भर करता है। कंप्यूटर को दिए जाने वाले छोटे या बड़े सब निर्देश माइक्रोप्रोसेसर चिप के पास पहुँचते हैं और वह डाटा प्रोसेसिंग करता है।

इंटरनेट तथा उसके एप्लीकेशन एरिया

अंजली

बी.ए. प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक 1221311002019

इंटरनेट विश्व भर के कम्प्यूटरों का आपस में कनेक्शन (Network) है। इंटरनेट दुनिया का सबसे बड़ा कम्प्यूटर नेटवर्क है। इंटरनेट प्रत्येक व्यक्ति को उसके डिवाइस की सहायता से आपस में जोड़ देता है। इस कारण इंटरनेट की मदद से दुनिया के किसी भी व्यक्ति से संपर्क बनाया जा सकता है। इंटरनेट की वजह से Digital लेने-देन संभव हो पाया है। इंटरनेट शब्द 1970 के दशक में चर्चा में आया था जोकि 1990 का दशक आते आते बहुत पॉपुलर हो गया।

1. E-Communication :-

इंटरनेट के माध्यम से एक इंसान किसी भी जगह से दुसरे इंसान से बात कर सकता है। कम्प्युनिकेशन के लिए हम लोग ई-मेल तथा व्हाट्सपप जैसे एप्लीकेशन करते हैं। कम्प्युनिकेशन के लिए आप इंटरनेट की मदद से डायरेक्टर Voice Call, Online Chat या फिर वीडियो कॉल भी कर सकते हैं।

2. E-Learning :-

ई-लर्निंग कम्प्यूटर आधारित शैक्षिक टूल या प्रणाली है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से कहीं भी किसी भी समय अध्ययन और अध्यापन की सुविधा देती है जैसे इंटरनेट पर ऑनलाइन सीखना, पढ़ना और पढ़ाना। वर्तमान में अधिकांश ई-लर्निंग इंटरनेट के माध्यम से लोगों तक पहुँचाई जाती है। आज के दिन बहुत सारी यूनिवर्सिटी तथा शिक्षा संस्थान कर्मचारियों तथा दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए ऑनलाइन या डिस्टेंस शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध करवाती हैं, जिसमें छात्र ऑनलाइन कंटेंट के माध्यम से अपने घर पर रहते हुए शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यह इंटरनेट के द्वारा ही संभव हो पाया है।

3. Online Shopping :-

ऑनलाइन क्रय E-Commerce का विशेष रूप है जिसमें उपभोक्ता वस्तु या सेवाओं को विक्रेता से सीधे इंटरनेट के माध्यम से खरीद सकता है। इस समय देश में करोबार करने वाली प्रमुख ई-कॉमर्स कम्पनियों की विभिन्न ऑनलाइन वेबसाइट के माध्यम से ग्राँसरी प्रोडक्ट्स के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स, एसेसरीज, रेडीमेड गारमेण्ट, गजेट्स, जूते, तथा किताबें आदि विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ एक ही क्लिक पर मँगाई जा सकती हैं।

4. Entertainment :-

इंटरनेट ने मनोरंजन के अनेक स्रोत खोजे हैं। अब आपको टेलीविजन पर अपने पसंदीदा धारावाहिक के लिए प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। इंटरनेट की सहायता से आप किसी भी समय किसी भी चीज को देख सकते हैं। इसके अलावा इंटरनेट पर कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और दिलचस्प वेबसाइटें हैं जो मनोरंजन के विशाल स्रोत प्रदान करती हैं।

5. Weather Forecasting

आजकल इंटरनेट के द्वारा हम मौसम का पूर्वानुमान भी लगा सकते हैं जिससे सीधा फायदा हमारे किसानों को पहुँचता है। मौसम विभाग इंटरनेट के माध्यम से सैटेलाइट्स के साथ जुड़े होते हैं जोकि मौसम से सम्बंधित पल-पल की अपडेट मौसम विभाग को भेजते रहते हैं।

साहित्य, संस्कृति व योग

श्री संदीप कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

साक्षी मलिक राजकीय कन्या महाविद्यालय मोखरा (रोहतक)

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, बोलने, खाने-पीने, योग, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वस्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति मानवीयता के उदात्त नियमों को परिभाषित करती है। सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है। समाज सभ्यता की व्यवस्थाओं का नाम है और संस्कृति व्यक्ति के अंदर के विकास का। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनाई गई पद्धतियों का परिणाम होता है। साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में घटित होने वाली विभिन्न घटना प्रसंगों को साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से प्रकट करता है। वर्तमान भारतीय साहित्य अपने भाषिक रूप से पृथक होकर भी मूलतः एक हैं। साहित्य का बहीरंग बदलता है पर उसकी आत्मा एक। भारतीय समाज विविध धर्मों, संप्रदायों, जातियों, प्रांतों में विभक्त है फिर भी इस में उत्पन्न होने वाली समस्याएं एक सी ही हैं। समाज, जाति, संप्रदाय, मान्यताओं, तौर-तरीके विशेष के कारण समस्याओं के उत्पन्न होने का माध्यम अलग हो सकता है। परंतु संस्कृति और साहित्य आपस में मिलकर चलते हैं यही कारण है कि भारतीय साहित्य बहुआयामी है। भारतीय साहित्य में भाव जगत में अंतर नहीं अपितु उस भाव को प्रकट करने वाली लेखनी की भाषा का अंतर है। भारतीय साहित्य पतली दाल की तरह है वह जहां-जहां भी फैलता है वहां-वहां रसपान करवा कर ही छोड़ता है, जो साहित्य का मूल लक्षण भी है।

भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, मुनियों और मनीषियों की भूमि रही है। इसीलिए भारतीय संस्कृति विश्व के आंगन में अपनी श्रेष्ठताओं और महानताओं के लिए प्रसिद्ध रही है। इसके मूल में सभी सुखी रहे की भावना ही निहित है। इस कारण हमारे ऋषियों, मुनियों और मनीषियों ने मानव-जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय किए हैं। इन उपायों में से एक उपाय है- योग। योग मानव-जाति के लिए भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार है। योग शब्द संस्कृति के 'युज' धातु से बना है।

जिसका शाब्दिक अर्थ है-जोड़ना। किसी वस्तु को अपने से जोड़ना अर्थात् किसी अच्छे कार्य में अपने आपको लगाना। कार्य शारीरिक, मानसिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। मन और शरीर से जो कार्य किया जायेगा, उसे ही योग कहते हैं। महर्षि पतंजलि द्वारा रचित 'योगसूत्र' योगदर्शन का मूल ग्रन्थ है। उन्होंने योग के आठ अंग बताते हुए कहा है कि चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है। अतः हमें शारीरिक, मानसिक, धार्मिक व आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योग की कोई न कोई क्रिया रोज पन्द्रह-बीस मिनट नियमित रूप से करनी चाहिए। भारतीय मूल्य का महत्व मानवीय सभ्यता संस्कृति के मूल में है। मानव समाज के विकास में मूल्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। साहित्य मूल्य को संरक्षण प्रदान करने का कार्य लगातार करता रहता है। साहित्य का संबंध मानव मूल्यों से है और साहित्य मूल्यों की अभिव्यक्ति करता है। मानव समाज की स्थापना के साथ ही मूल्य पर सोच विचार करता रहा है। मूल्य ही समाज को संगठित बनाए रखने में सहायक साबित होते हैं। हिंदी के सार्वजनिक रूप का आधार भारतीय लोगों का मानस है। भारतीय संस्कृति मूल्यों पर आधारित है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी लोकवाद सम्पन्न आचरण को ही महत्व प्रदान किया है। मूल्यों की संक्षिप्त किंतु उद्देश्य पूर्ण परिभाषा गोस्वामी तुलसी के मानस में की है। साथ ही आसुरी प्रवृत्तियों के विनाश के लिए जिन मूल्यों का निर्देश किया है वे मानव मूल्य हैं और जिसकी स्थापना समग्र भारतीय साहित्य में हुई है।

प्राचीन भारतीय परंपरा और संस्कृति की अमूल्य देन योग यह मनुष्य की चेतना के विकास का विज्ञान है। योग में पदार्थ जीवन और चेतना का विकास का समन्वय होता है। यह विज्ञान और अध्यात्म का योग भी कराता है। योग के चमत्कारिक प्रभाव को मेडिकल साइंस भी मान चुका है। योग का इतिहास हजारों साल पुराना है। श्रुति परंपरा के अनुसार भगवान शिव योग विद्या कि प्रथम आदि गुरु, योगी या आदियोगी हैं। हजारों साल पूर्व भगवान शिव ने हिमालय के कैलाश मानसरोवर झील के किनारे सप्तऋषियों को योग का गुढ़ ज्ञान दिया था। तत्पश्चात अत्यंत महत्वपूर्ण योग विद्या को सप्त ऋषियों ने एशिया, मध्यपूर्व उतरी अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका समेत विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित किया। प्राचीन भारत में योग का अस्तित्व था इसका प्रमाण सिंधु सरस्वती घाटी सभ्यता में योग साधना करती अनेकों आकृतियों के साथ प्राप्त ढेरों मुहर और जीवाश्म अवशेष हैं। महर्षि पतंजलि के अलावे अनेकों ऋषियों और योग आचार्यों ने योग अभ्यासों व यौगिक साहित्य के माध्यम

से इस क्षेत्र के संरक्षण व विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज पूरा विश्व योग से लाभांविता हो रहा है। यह दिन-प्रतिदिन विकसित व समृद्ध हो रहा है।

योग संपूर्ण भारत में किया जाता है। इसमें गुरु और शिष्यों की सक्रिय भागीदारी सम्मिलित है जिसमें लिंग, आयु, धार्मिक प्रवृत्तियों के बंधन से परे व्यक्ति, संस्थाएं और आम सार्वजनिक समूहों, सोसाइटियों, समुदाय, शैक्षणिक संस्थाएं, समाज के आम लोग जैसे विस्तृत श्रेणियों के लोग सम्मिलित होते हैं। आजकल योग एक समग्र शारीरिक और अध्यात्मिक कल्याण प्रणाली है जिसका पूरे भारत में उपयोग किया जाता है, जबकि इसकी प्राचीन प्रणाली सिंधु घाटी सभ्यता से पहले उत्पन्न हुई थी। और इस तथ्य की पुष्टि भारतीय उपमहाद्वीप पर पुरातात्विक खोजों से हुई है और इसके अतिरिक्त भारतीय साहित्य में इस विषय पर लगातार लिखे हुए ग्रंथों की परंपरा है जिसमें योग के भौतिक, व्यवहारिक, तात्विक और आध्यात्मिक पहलुओं पर चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त पारंपरिक भारतीय नृत्य और नाटक कला की तकनीकों में योग क्रिया के विभिन्न आसन, इशारे और सांस लेने के व्यायाम प्रचुर मात्रा में सम्मिलित हैं।

मूल रूप से योग व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण हेतु एक पारंपरिक और प्राचीन भारतीय समग्रतात्मक एकीकरण पर केंद्रित है यह निर्देशों और अभ्यास के बीच एक जीवंत संपर्क का सबसे उचित उदाहरण है। अन्य भारतीय परंपराओं की यह प्रणाली भी गुरु से शिष्य को सौंपी जाती है जो कठिन अभ्यास के बाद इस प्रणाली में पारंगत हो जाता है और स्वयं गुरु बनाने और दूसरों को सिखाने योग्य बन जाता है। पतंजलि ऋषि के इसे अपने योग सूत्रों में प्रतिबद्ध करने से पहले ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मण से लेकर उपनिषद् और श्री भागवत गीता जैसे दार्शनिक ग्रंथों तक भारतीय लेखन परंपरा में योग की उपस्थिति अच्छी तरह से प्रलेखित है। पतंजलि के बाद कई महान ऋषियों और योग गुरुओं ने अपने आलेखों के माध्यम से इस प्रणाली के बौद्धिक संरक्षण और प्रोत्साहन में योगदान दिए हैं। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव इस प्रणाली के सबसे पहले गुरु थे। योगिक शास्त्रों के अनुसार योग करने से व्यक्तिगत चेतना का सार्वभौमिक चेतना से मिलन हो जाता है और इस प्रकार के तत्वों के बीच सही सामंजस्य होता है। योग का उद्देश्य सभी प्रकार के कष्टों को कम करने या दूर करने और मुक्ति की स्थिति प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए आंतरिक स्वयं को महसूस करना है। व्यापक रूप से प्रचलित योगाभ्यास यम (पांच परहेज), नियम (पांच अनुपालन), आसन (आसन), प्राणायाम (सांस रोकना), प्रत्याहार (अमूर्तता), धारणा (एकाग्रता), ध्यान (चिंतन), समाधि (पूरी तरह से एकीकृत चेतना), बंध (ताला), और मुद्राएं (आंगिक अभिनय), सत्कर्म (सफाई के तरीके), युक्त आहार (समग्र भोजन), युक्त कर्म (सही क्रिया) और मंत्र जाप (पवित्र शब्दों का जप), और भी बहुत कुछ। योगिक अभ्यास जीवन के संतुलित तरीके को बनाए रखने के लिए लाखों लोगों की मदद करता है। हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का ही रूप है।

हमारे धर्म ग्रन्थों में यह कहा गया है कि -

‘कुर्वन्नेवेद्ध कर्माणि जिजीविशेत्शतः समाः।’

अर्थात् कर्मशील रहते हुए सौ वर्ष जीने की अभिलाषा करनी चाहिए यह शरीर कर्मशील रहे उसके लिए स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है तथा स्वस्थ रहने के लिए योगाभ्यास सर्वश्रेष्ठ साधन है। योग का शाब्दिक अर्थ होता है - जोड़ना अर्थात् धार्मिक विचारधारा के अनुसार ईश्वर से मिलन का प्रयास ही योग कहलाता है। ईसा से लगभग दो शताब्दी पूर्व पतंजलि ने योगशास्त्र ग्रंथ की रचना की थी। योग के प्रमुख चार मार्ग - भक्ति, ज्ञान, कर्म और राज है। भारतीय धर्मशास्त्रों में यदि हम देखें तो भगवान श्रीकृष्ण ने भी गोपियों की विरह वेदना को समाप्त करने के लिए योग संदेश लेकर के उद्धव को गोपियों के पास भेजा था। आज यह प्रमाणित हो चुका है कि योग के माध्यम से ही असाध्य रोगों से निजात पाया जा सकता है। इसीलिए आवश्यकता इस बात की है कि अस्पताल बढ़ाने को आतुर सरकार और अर्थ लोलुप लोग स्वास्थ्य रक्षा में योग की भूमिका को स्वीकार करें और उसे लोगों की दिनचर्या में स्थान देना है तभी स्वस्थ समाज और देश का निर्माण होगा लोगों में स्वस्थ विचारों का संचार होगा। स्वस्थ साहित्य और संस्कृति का निर्माण होगा।

सामान्यतः संस्कृति के संबन्ध में जब बात की जाती है तब एक गौरव का भाव हमारे मन में उदित होता है। इस गौरव के बोध में जातीय अस्मिता की भावना पीठिका के रूप में सक्रिय होने के कारण एक तरह की विशुद्ध सार्थकता एवं संतोष की तीव्र अनुभूति हम करते हैं। चूंकि भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है और काल के प्रवाह में जब अनेक समृद्ध संस्कृतियाँ भी विनष्ट हो चुकी हैं और भारतीय संस्कृति टिकी हुई तब यह गौरवबोध अधिक युक्तियुक्त भी लगने लगता है और यह धारण जाने अनजाने हमें सांस्कृतिक परिवेश, ऐतिहासिक विकासक्रम, सांस्कृतिक जिजीविषा और टिकाऊपन की स्थायी विशेषताएँ कालप्रवाह में विचलित सांस्कृतिक वैशिष्ट्य, चुनौतियों का स्वरूप, आंतरिक

तनाव और अंतविरोध आदि के बारे में सोचने से विमुख करती है। वैसे भी संस्कृति से एक जीवंत और दीर्घ परंपरा का बोध जुड़ा हुआ है और इस कारण सामान्यतः हम अतीत से प्राप्त संस्कारों के विचार में अधिक उलझ जाते हैं और सांस्कृतिक प्रक्रिया के वर्तमान स्वरूप को और उसके विभिन्न स्तरों पर चल रहे संघर्ष को कुछ नजरअंदाज करते हैं। वस्तुतः अतीत के सांस्कृतिक स्वरूप को पर्याप्त गहराई से देखा और सोचा गया है – आवश्यकता साहित्यिक सांस्कृतिक स्वरूप को देखने की है। यद्यपि विषय संस्कृति विश्लेषण न होकर हिन्दी साहित्य से संदर्भित करता है कि फिर भी सांस्कृतिक विचार का कुल परि श्य देखना आवश्यक जान पड़ता है। इस में सामान्यतः सांस्कृतिक विषयों पर चिंतन करने वाले मनीषी एकमत हैं कि भारतीय संस्कृति एक साहित्यिक संस्कृति एवं योग है और उसने विभिन्न सांस्कृतियों को पचाने में और अपने स्वभाव से समन्वित करने में अद्भुत प्रतिभा और लचीलेपन का परिचय दिया है।

आर्यावर्त में जिन वैदिक-अवैदिक सभ्यताओं और संस्कृतियों का संपर्क संघर्ष समन्वय हुआ उसने लंबे अर्से तक भारतीय मानस के आचरण, व्यवहार, जीवन के आदर्शों और मूल्यों को प्रेरित किया तथा उसे दिशा और आकार दिया। ऐसी संस्कृतिक का प्रवहमान किया जो भौतिक सुविधाओं को महत्व देती हुई भी आध्यात्मिक संस्कृति को प्रवहमान किया जो भौतिक सुविधाओं को महत्व देती हुई भी आध्यात्मिक संस्कृति से अनुशासित होती रही। यह आध्यात्मिक मूल्यों को चरम महत्व विभिन्न सामाजिक और वैयक्तिक आचरणों के आदर्शों में देखा जा सकता है। अधिकार या हक से अधिक कर्तव्य की वरीयता, परिवार, जाति और समाज के प्रति व्यक्ति की उन्मुखता, बड़ों के प्रति आदर अर्थात् अनुभव और ज्ञान के सम्मुख विनम्रता, छोटों और समवयस्कों के प्रति वात्सल्यमय प्रेम, भाव, परिवार जाति और समाज के माध्यम से सामूहिक जीवनाभिव्यक्ति, अर्थ और काम जैसे दो महत्वपूर्ण पुरुषार्थों की स्वीकृति और गृहस्थ धर्म के रूप में उनकी संतुलित परिपूर्ति पुरुषार्थों का धर्म के द्वारा नियंत्रण और मोक्ष की ओर उन्मुखता का चरम लक्ष्य (जीवन की ऐषणाओं को त्याग नहीं कर उनकी संयत परितृप्ति के माध्यम से उनके ऊपर उठने की, निरंतर जीवन में जड़ स्थितियों को अतिक्रमित करने की एवं गत्यात्मकता की बात इसमें अंतर्निहित है।) ये इसी आध्यात्मिक वरीयता के तत्व हैं। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृत भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास, भवभूति, भास के काव्यों और नाटकों के माध्यम से बार बार व्यक्त हुआ है। गेटे ने 'शांकुतल' को पढ़कर उललसित मनोभाव में कहा था कि उसमें स्वर्ग और धरा का उदात्त सम्मिलन है – यह समूची भारतीय संस्कृति और साहित्य के संबंध में कहा जा सकता है। भारतीय प्राचीन संस्कृति का एक समादेशक सामाजिक रूप वहाँ मिलता है जहाँ नाट्य को नाट्यवेद कहकर वह सब के लिए – शूद्रों के लिए भी खुला रखा गया है। असल में नाट्यवेद ही नहीं एक प्रकार से जीवन की भावनात्मक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण स्रोत ही खुले थे। ज्ञान के क्षेत्र में कठोर वर्ण व्यवस्था का बंधन शायद इसलिए आवश्यक हो गया कि वह केवल उच्चारण और स्मरण के आधारों पर ही स्थित थी जिसके लिए कठोर अनुशासन, परंपरा की सशक्त पृष्ठभूमि और निमर्म अभ्यास की आवश्यकता थी। आगे चलकर जैसा कि हर अच्छे बंधन का विकासमान रूप खत्म होकर सड़ियन रूप ही बच जाता है, इसी प्रकार इन बंधनों का भी हुआ।

साहित्य सत्य के साथ शिव और सौंदर्य का भी समन्वय करता है। हमारे संस्कृत साहित्य में उपर्युक्त सांस्कृतिक स्थिति का परिमार्जन और सौष्ठवयुक्त रूप संस्कृत भाषा और प्राकृत भाषाओं के माध्यम से प्रकट हुआ। यह धरोहर के रूप में हिन्दी साहित्य को भी प्राप्त हुआ। हिन्दी के आदिकाल और मध्यकाल का स्वरूप देखा जाए तो सांस्कृतिक दृष्टि से आमूलचूल परिवर्तन घटित नहीं होता। यह आक्रमण इस्लाम धर्म को अपने साथ लेता आया। इससे हमारी संस्कृति में कुछ तबदीलियाँ अवश्यक हुईं। मध्ययुग में इस्लाम के राजनैतिक आक्रमण के सामने हमारी भौतिक सभ्यता नहीं टिक पाई जिसके लिए प्रदेश की प्राकृतिक स्थितियाँ भी आंशिक रूप में जिम्मेदार हैं जो मनुष्य को संघर्षशील कम और शांतिप्रिय अधिक बना देती है। साथ साथ आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति लगाव ने भौतिक शक्ति के प्रति कुछ अनास्था भी उत्पन्न कर दी थी। आपसी फूट और वैयक्तिक संकीर्ण महत्वाकांक्षा भी भारतीयों वीरों की हार का कारण बनी। हमारी सामासिक सांस्कृतिक पर इससे कुछ अच्छे और कुछ बरे प्रभाव भी पड़े। ध्यान में रखने की बात है कि हिन्दी का साहित्य भी प्राकृत अपभ्रंश का दामन छोड़कर अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व इसी समय ग्रहण कर रहा था। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में गोरखनाथ ने योग साधना को अपनाया और इसके चमत्कारिक परिणाम से लोगों को योग साधना की ओर प्रेरित किया।

इस्लाम के आक्रमण से निश्चित रूप से भारतीय बहुदेववादी आस्था पर आघात हुआ और इस्लाम की एकेश्वरवाद की घोषणा ने हमें सभी देवी देवताओं को कहीं न कहीं एक भगवान से जोड़ने के लिए बाध्य किया। एकेश्वरवाद, ईश्वर के निर्गुण सगुण रूपों के स्वीकार के लिए भारतीय आध्यात्मिक चिंतनप्रणाली में स्रोत नहीं था ऐसी बात नहीं है परंतु तुलसी जैसे समन्वयवादी महाकवि में यह प्रयत्न अधिक सजग

रूप में दिखाई पड़ता है। ऐसा लगता है कि सभी देवताओं को एक भगवान के रूप में देखने का विशेष प्रयास किया जा रहा है। आक्रामक इस्लाम सभ्यता ने निर्गुण के प्रति अधिक उन्मुख किया हो तो आश्चर्य नहीं। उधर भारतीय संस्कृति के उज्वल पहलुओं को आत्मसात करने का इस्लाम का प्रयास भी चल रहा था। आक्रमण के कारण अपनी जात विरादरी में समा जाने का हिन्दुओं को स्वभाव चरमोत्कर्ष पर था और उसको विरोध नाथपंथ से लेकर सिख धर्म तक पाया जाता है। साहित्यिक रूप में उसका सशक्त प्रभाव कबीर में देखा जा सकता है। जायसी जैसे सूफी महाकवि ने भी इस्लाम से भारतीय सांस्कृतिक श्रेय को मिलाने का प्रयास किया। राजनीतिक स्थितियां चाहे जैसी रहीं हो इन महाकवियों के काव्य में भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं योग का उज्वल अंश प्रकट हो रहा था। आध्यात्मिक मूल्यों की भौतिक सुख सुविधाओं पर वरीयता, मनुष्य और मनुष्य के बीच प्रेम-भाव पर आधारित स्नेह संबंधों की उत्कट आकांक्षा (जो सूरदास के काव्य में चरमोत्कर्ष पर है और जायसी ने जिसे दार्शनिक आधार दिया है,) बहुदेववाद के परे सगुण-निर्गुण, इस सत्य को शिव और सौंदर्य से समन्वित कर देखने में आस्थ, गृहस्थ जीवन को एक धर्म और कर्तव्य के रूप में ग्रहण करने की कोशिश, राजसत्ता या शक्ति को शील से समन्वित करने के अपेक्षा आदि सांस्कृतिक मूल्य हिन्दी के साहित्य में प्रकट होते हैं।

एक छोर पर इस्लाम की आक्रामकता कबीर के माध्यम से धार्मिक रूढ़ियों पर प्रहार कर रहीं थी और सिखधर्म के माध्यम से वीरधर्म की तलाश कर रही थी तो दूसरे छोर पर समाज से रहने वाले योगियों नाथपंथियों सिद्धों की योग साधना की तीव्र धार चल रही थी और इस सबके बीच महाकवि तुलसी की प्रज्ञा विराट समन्वय का प्रयास कर रही थी। असल में मध्ययुगीन सांस्कृतिक की समग्रता 'रामचरितमानस' में प्रकट हुई। साहित्य की ओर स्थूल उपयोगितावादी ष्टि से अथवा इस हाथ ले उस हाथ दे वाली फायदावादी मनोवृत्ति से देखने वालों की दृष्टि से यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि रामचरितमानस जैसी रचनाओं ने भारतीय मानस को राजनीतिक आक्रमण के प्रति कहां तक सजग किया और अगर किया तो बाद के अंग्रेजों के आक्रमण के विरोध में हम क्यों नहीं तैयार रहे। असल में यह कहकर, कि साहित्य और परिवेश की चुनौतियों का सीधा संबंध नहीं होता, प्रश्न को टालना नहीं चाहिए। इनके अखाड़े में ही उतरकर प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है।

अंग्रेजों के आक्रमण ने फिर से यह प्रमाणित किया कि सांस्कृतिक संस्कारों से वंचित हमारी राजनीतिक शक्ति, आपसी फूट, वैयक्तिक महत्वाकांक्षा, भौतिक शक्ति के साधन उपार्जित करने में अक्षमता आदि हमारे दोष दूर नहीं कर पाई राम के चरित्र ने हमारे क्षत्रिय धर्म का वांछित संस्कार नहीं किया। परंतु जरा अधिक गहरे उतरना होगा। अंग्रेजों ने हमें भौतिक धरातल पर परास्त अवश्य किया किंतु क्या वे हमारे सांस्कृतिक उत्सवो को उखाड़ने में सफल नहीं हुए। यद्यपि अंग्रेजों के विरोध में डटकर खड़ी रहने वाली प्रतिरोधी शक्तियों का तेजस्वी अविष्कार लोकमान्य देन नहीं है फिर भी इन दोनों ने अंग्रेजों का मुकाबला करने की सामर्थ्य गीता में पाई थी, इससे कैसे इंकार किया जा सकता है। दोनों को 'रामचरितमानस' एवं सांस्कृतिक साहित्यिक ग्रंथों ने और संस्कारों ने जो प्रेरणा प्रदान की थी, इससे इंकार कैसे किया जा सकता है।

'रामचरितमानस:' के संस्कारों से संयुक्त उत्तर भारतीय जनता ने तिलक में भगवान को देखा, महात्मा गांधी में राम और कृष्ण के संयुक्त रूप को देखा और इस विराट जनता ने दोनों का अनुगमन किया, यह तथ्य कैसे नकारा जा सकता है। अगर तुलसी, कबीर, सूर, जायसी, नानक के जनमानस पर पड़े व्यापक प्रभाव को (जौ मौखिक परंपरा के रूप में अधिक शक्तिशाली बना रहा) अनदेखा कर दिया जाए तो तिलक और महात्मा गांधी के पीछे सांस्कृतिक अस्मिता से युक्त जनमानस खड़ा रहा। उसका स्पष्टीकरण कैसे दिया जा सकता है। ध्यान में रहे कि अंग्रेजों के सांस्कृतिक संपर्क से जो दो महत्वपूर्ण प्रवाह उत्पन्न हुए उनमें एक था मुद्दीभर शिक्षित लोगों का जो अंग्रेजों को ही देवता मानकर अनुकरण कर रहे थे। दूसरा सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रवाह था जो राजा राममोहन राय से लेकर महात्मागांधी तक एक भारतीय संस्कृतिक के मूल रूप से जुड़कर विकसित होना चाहता था। जन मानस ने दूसरे का ही साथ दिया। स्वाधीनता के लिए उत्सर्ग और सेवा की भूमिका निभानेवालों के संस्कारों में क्या मध्ययुगीन सांस्कृतिक संस्कारों का स्थान नगण्य है। और यह संस्कार कहां से हुए। ध्यान में रहे कि राजनीतिक सत्ता के पीछे भारतीय जनमानस मध्ययुग में अपवादात्मक रूप में ही रहा परंतु जब अंग्रेजों का विरोध धर्म और कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया, स्वाधीनता सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के हेतु आवश्यक मान ली गई तभी राजनीतिक दृष्टि से उदासीन जनता स्वाधीनता आंदोलन में बड़े पैमाने पर उतरी और पहली बार भौतिक शक्ति से प्रबलतर अंग्रेजी सत्ता सांस्कृतिक विरोध के आगे परास्त हुई। इस हार में हिंसा कितनी थी अहिंसा कितनी थी, यह विवादास्पद विषय है किंतु भारतीय जनमानस की वह ऐसी अभिव्यक्ति थी जिसमें स्वार्थ दब गए थे और भौतिक सुख सुविधा की आकांक्षाएं धूमिल हो गई थी और सांस्कृतिक उर्जस्विता को चरम महत्व मिलता था। इसमें हिन्दी साहित्य के संस्कार प्रभूत यात्रा में थे। लेकिन अंग्रेजों के चले जाने के बाद जब हम नए देश के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध हुए तब नई चुनौतियाँ आई, नई समस्याएँ आई।

हिन्दी साहित्य का सांस्कृतिक योगदान क्या है। क्या हमारी साहित्यिक संस्कृतिक का रूप इस चुनौती को पचा सका। साहित्य के माध्यम से यह प्रक्रिया कैसे सिद्ध हुई? एक तथ्य यह है कि इस्लाम संस्कृति भारतीय संस्कृति से समन्वित हो सकी थी। इसका कारण यह था कि मूलभूत धारणाओं में कुछ साम्यविंदु थे। ईश्वरीय अस्तित्व में आस्था और भौतिकता से परे किसी उच्चतम तत्व की स्वीकृत का अहसास दोनों में था। दोनों को एक दूसरे के साथ समझौता करना ही पड़ा। अंग्रेजी में संस्कृति के साथ यह बाध्यता नहीं थी। धर्म प्रचार के रूप उसने अवश्य प्रभाव डाला। चूँकि धर्म प्रचार और राजनीतिक साम्राज्य दोनों को यथासंभव अलग रखने को अंग्रेज शासक विवश हुए। टकराहट की स्थितियाँ भी कम नहीं पैदा हुईं। ईसा मसीह के विचारों और आचारों में जो प्रेमतत्व पर बल था, पड़ोसियों को प्यार करने पर जोर था, आपसी व्यवहार में अहिंसक और शांतिपूर्ण स्नेह संबंधों का अनुरोध था, दुखियों और पीड़ितों की सेवा में धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति का अन्वेषण था, उसके कारण भी सामान्यतः परस्पर समन्वय का वातावरण ही रहा। आश्चर्य की बात यही है कि ईसाई समाज ने हिन्दी को सर्जनशील सात्यिकार स्वाधीनता प्राप्ति तक लगभग नहीं दिए।

संस्कृति संस्कार, आचरण, शिष्टाचार, सभ्यता है। मनुष्य की जीवन शैली है संस्कृति की परिभाषा देते हुए रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा कि - असल में संस्कृति जीवन का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं। इसीलिए संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे संपूर्ण जीवन में व्याप्त हैं और जिसकी संरचना एवं विकास में अनेक सदियों का हाथ है यही नहीं संस्कृति हमारा पीछा जन्म जन्मांतर नहीं छोड़ती है।

निष्कर्षण:- साहित्य संस्कृति का अक्षय कोश है। संस्कृति साहित्य में प्राण प्रतिष्ठा करती है। किसी भी देश की संस्कृति को जानना है तो वहाँ का साहित्य एक सशक्त माध्यम है। साहित्य और संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध है। बिना साहित्य के संस्कृति का सही ज्ञान नहीं हो सकता है यद्यपि साहित्य मानव मन की अभिव्यक्ति का एक विशिष्ट संपत्ति होती है। जिसमें समाज का प्रतिबिंब झलकता है यद्यपि समाज और राष्ट्र नष्ट हो सकते हैं, किंतु साहित्य नहीं हो सकता यद्यपि विभिन्न धर्म, संस्कृति, सभ्यता भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि हैं। समय के प्रवाह में यह संस्कृति विभिन्न संस्कृतियों से टकराते हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सफल रही है। भारत का गौरवगान करने में किसी भी साहित्य के सर्जक का राष्ट्र प्रेम स्वतः ही मुखर हो जाता है जो कि पौराणिक सांस्कृतिक संस्कारों की छाप को प्रदर्शित करता है। भारतीय संस्कृति की विशेषता को संपूर्ण विश्व के लोग बड़े आश्चर्य से देखते हैं। भारतीय संस्कृति महा समुद्र के समान है जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन हो रही हैं। सभी विदेशी लोगों ने हमारी संस्कृति के सामने घुटने टेक दिए तथा बड़ी शीघ्रता से हमारी संस्कृति में विलीन हो गए और हम भारतवासी अपने देश की महान संस्कृति पर गर्व करते हैं यद्यपि योग भारतीय संस्कृति का एक अनुपम उपहार है। जो आज के मनुष्य के व्यस्ततम और तनावग्रस्त जीवन की एक अमूल्य औषधि है। योग स्वास्थ्य की कुंजी है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा पूरी कर लेता है। इसीलिए आज सभी के लिए योग लाभदायक सिद्ध हो रहा है और इसका प्रचार-प्रसार दिनों-दिन बढ़ता चला जा रहा है।

संतों भाई आई ग्याँन की आँधी रे। भ्रम की टाटी सबै उडाँनी, माया रहै न बाँधी।।

हित चित्त की दै यूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा। त्रिस्नों छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।

जोग जुगति करि संतों बाँधी, निरचू चुवै व पाँणी। कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।।

आँधी पीछे जो जल चूठा, प्रेम हरि जन भीनों। कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनों।।

भावार्थ : कबीर ज्ञान का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि हे संतों ! ज्ञान की आँधी आई है। उसके प्रभाव से भ्रम की टाटी उड़ गई है। अब वह माया की रस्सी से बँधा नहीं है। स्वार्थरूपी दोनों खंभे और मोह की बल्लियाँ टूट गई हैं। तृष्णा का छप्पर ऊपर गिर जाने से घर में रहे कुबुद्धि के सभी बर्तन टूट गए हैं। संतों ने योग-साधना के उपाय से एक ऐसा मजबूत छप्पर बनाया है, जिससे थोड़ा भी पानी नहीं टपकता है। संतों ने जब ईश्वर का मर्म जान लिया तो उनके शरीर से समस्त विकार नष्ट हो गए। इस ज्ञान रूपी आँधी के पश्चात् जो प्रभु के प्रेम की वर्षा हुई है उसमें सभी भीग गए हैं। ज्ञान के सूर्योदय से मन का अंधकार नष्ट किया जाता है।



इंटरनेट का इतिहास

सोनिया

बी.ए. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमांक 1211311002012

इंटरनेट का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इंटरनेट शब्द का आधार 1960 के दशक के अंत में तब बना जब संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के रक्षा विभाग ने अर्पानेट (ARPANET-एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी नेटवर्क बनाया), जिसका प्रमुख उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के रक्षा विभाग के विभिन्न संस्थानों को आपस में जोड़ना था ताकि तकनीकी ज्ञान को आपस में एक दूसरे के साथ साझा किया जा सके।

अर्पानेट 1970 के दशक में भी लगातार अपनी तकनीक में हिजाफा करता चला गया तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की विभिन्न यूनिवर्सिटीज तथा इंस्टीट्यूट्स को भी इसके साथ जोड़ दिया गया।

1983 में अर्पानेट ने TCP/IP प्रोटोकॉल को अडॉप्ट किया जिससे पश्चात शोधकर्ताओं ने विभिन्न नेटवर्कों को आपस में जोड़ना प्रारम्भ कर दिया, जिससे आधुनिक इंटरनेट की उत्पत्ति हुई। 1990 में महान वैज्ञानिक टिम बर्नर्स ली ने वर्ल्ड वाइड वेब (www) का अविष्कार किया जिसके बाद आधुनिक इंटरनेट का स्वरूप विश्वव्यापी हो गया।

CTRL + A to Z

MOSTLY USED SHORTCUT KEYS

Muskan

B.A. I

Roll No. 1221311002016

Ctrl + A = Select All

Ctrl + B = Bold

Ctrl + C = Copy

Ctrl + D = Duplicate

Ctrl + E = Allign Center Side

Ctrl + F = Find

Ctrl + G = Group & Go to

Ctrl + H = Replace

Ctrl + I = Italic

Ctrl + J = Justify

Ctrl + K = Hyperlink

Ctrl + L = Allign Left Side

Ctrl + M = New Slide

Ctrl + N = New Page

Ctrl + O = Open

Ctrl + P = Print

Ctrl + Q = Quite

Ctrl + R = Allign Right Side

Ctrl + S = Save

Ctrl + T = New Tab

Ctrl + U = Underline

Ctrl + V = Paste

Ctrl + W = Close the Window

Ctrl + X = Cut

Ctrl + Y = Redo

Ctrl + Z = Undo



DON'T TRUST

Jyoti

B.A. III

Roll No. 120131002052

Don't Trust Your Hand Lines Too Much
Because Luck Also Happens To Those
Who Do Not Have Hands.

Change Your Life Today
Do Not Gamble On Your Future
Act Now, Without Delay.

Believe In Yourself And All That You Are.
Know That There Is Something
Inside You
That Is Greater Than Any Obstacle.

LIFE

Aarti

B.A. III

Roll No. 120131002030

Life Cannot Be
Changed In A Minute but
Decision Taken In A Minute
Changes Everything In Life
Always Stay Calm
Before You Decide.

Success Isn't Just About
What You Accomplish In Your
Life, It's About What You
Inspire Others To Do.

GOOD THINGS

Jyoti

B.A. III

Roll No. 120131002002

Good things come to people
who wait,
but better things come to those
who go out and get them.

Do not give up
because great things
never come from
comfort zones life
gives you what you
work for.

You can't go back and change the past,
so look to the future and
don't make the same mistakes twice.

CULTURAL ACTIVITIES



DIFFERENT ACTIVITIES



DIFFERENT ACTIVITIES



सुर्खियों में महाविद्यालय

दीक्षांत समारोह में छात्राओं को डिग्रियां बांटी



रोहताक | मोखरा गांव स्थित साक्षी मलिक गर्ल्स कॉलेज में वार्षिक पुरस्कार वितरण एवं दीक्षांत समारोह किया गया। इसमें शैक्षणिक और सह शैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को सम्मानित किया। वर्तमान और पूर्व छात्राओं के साथ-साथ अभिभावकों व ग्रामीणों ने भाग लिया। सत्र 2021-2022 में कॉलेज परीक्षा परिणाम में छात्रा अनीता देवी प्रथम, प्रीति द्वितीय और रवीना तृतीय रही। मुख्य अतिथि पूर्व अध्यक्ष प्रो. एसपी खटकड़ और विशिष्ट अतिथि प्रो. विनोद बाला तक्षक व कैप्टन जगबीर बडक रहे। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सीमा जैन ने की। संयोजक सुरेश कुमार रहे। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. सीमा जैन, सुनीता धनखड़, रचना, सोनिया, कुमारी कविता, डॉ. विनोद कुमार, कृष्ण कुमार, रविंदर कुमार आदि समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

स्लोगन स्पर्धा में रोजी और पोस्टर मेकिंग में ज्योति प्रथम



महम | मोखरा गांव स्थित राजकीय स्लोगन प्रतियोगिता में रोजी प्रथम, कन्या कॉलेज में जल शक्ति अभियान आरती द्वितीय और ज्योति ने तृतीय

मोखरा: छात्राओं को सहायक रहने के लिए किया प्रेरित



महम | गांव मोखरा स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ ने महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का योगदान पर एक दिवसीय कार्यशाला की। मुख्य वक्ता एमडीए के राजनीतिक विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. ज्योति सहायक ने छात्राओं को सहायक रहने के लिए प्रेरित किया। महिला प्रकोष्ठ प्रभारी सुरेश कुमार ने छात्राओं को मुख्य वक्ता के विचारों को अपने जीवन में उतारने को कहा।

भाषण स्पर्धा में मोनिका प्रथम और परीक्षा द्वितीय रही



महम | मोखरा गांव स्थित राजकीय कन्या कॉलेज में सोशल मीडिया पर भाषण प्रतियोगिता हुई। इसमें बीए द्वितीय वर्ष की मोनिका प्रथम, बीए तृतीय वर्ष की परीक्षा द्वितीय और बीए द्वितीय वर्ष की तनु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य डॉ. सीमा जैन ने ने कहा कि प्रतियोगिता अग्नेजी विभाग और कॉलेज आईक्यूएसी की। उन्होंने छात्राओं को सोशल मीडिया के दुरुपयोग से बचने और इसका अधिक प्रयोग न करने का आग्रह किया। उन्होंने सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू पर भी प्रकाश डाला। संचालन डॉ. विनोद ने किया। इस मौके पर सुरेश कुमार, डॉ. विनोद कुमार, संदीप कुमार सहायक, परमजीत, प्रभा, कृष्ण कुमार, रविंद्र कुमार आदि ने विचार रखे।

मोखरा में कॉलेज फैस्ट तथा म्यूजिक कंसर्ट कार्यक्रम



महम | राजकीय कन्या महाविद्यालय मोखरा में महिला प्रकोष्ठ एम्व एन एस एस यूनिट के अंतर्गत कॉलेज फैस्ट तथा म्यूजिक कंसर्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. सीमा जैन ने की। मंच का संचालन एनएसएस यूनिट के प्रभारी सुरेश कुमार ने किया। डॉ. मुकेश वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर संगीत विभाग पं. नेकी राम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहताक तथा ज्योति चौहान सहायक प्राध्यापक संगीत मुख्य अतिथि रही।

पोस्टर मेकिंग में ज्योति, स्लोगन लेखन में रेनु प्रथम

महम | मोखरा स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या सीमा जैन ने बताया कि कार्यक्रम में छात्राओं ने बह-चढ़कर भाग लिया। पोस्टर मेकिंग में छात्रा ज्योति ने प्रथम, शीतल ने दूसरा तथा सुशीला ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। स्लोगन लेखन में रोजी, रेनु और शीतल ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हासिल किया। प्रश्नोत्तर में रेनु प्रथम, मोनिका द्वितीय तथा पूजा तृतीय स्थान पर रही। संवाद

निबंध लेखन प्रतियोगिता में मोनिका प्रथम स्थान पर रही



महम | मोखरा गांव के राजकीय कन्या कॉलेज में सड़क सुरक्षा पर निबंध लेखन प्रतियोगिता हुई। इसमें प्राचार्य डॉ. सीमा जैन ने छात्राओं को सड़क सुरक्षा संबंधित नियमों के बारे में जानकारी दी। निबंध प्रतियोगिता में बीए द्वितीय वर्ष से मोनिका प्रथम, तनु द्वितीय और शीतल तृतीय रही। सड़क सुरक्षा परिवहन के प्रभारी सुरेश कुमार ने विचार रखे। सभी विजेता छात्राओं को सम्मानित किया।

'युवाओं को नशे से बचाने को आगे आएं'



महम | गांव मोखराके राजकीय कन्या कॉलेज में एनएसएस इकाई के तहत सात दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शुभारंभ प्राचार्य डॉक्टर सीमा जैन ने द्वीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य वक्ता के तौर पर राजकीय महिला महाविद्यालय से डॉ. किरण शर्मा पधारी। उन्होंने अपने भाषण के द्वारा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका व नशा मुक्त भारत के महत्व पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि हमें युवाओं को नशे से बचाकर युवा शक्ति का राष्ट्र निर्माण में प्रयोग करना चाहिए।

यातायात का पाठ पढ़ाया



यातायात के नियमों का पालन करने की शपथ लेती छात्राएं। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी
महम | राजकीय कन्या महाविद्यालय मोखरा में सड़क सुरक्षा सेल के तलावधान में एक दिवसीय विस्तृत व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ और यातायात चिन्ह आदि नियमों को अपने जीवन में उतारने व अपने परिवार पर भी लागू करने का आह्वान करें। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. सीमा जैन के अलावा डॉ. प्रदीप मलिक, डॉ. विनोद, संदीप कुमार सहायक, कृष्ण कुमार, रविंद्र कुमार व सुरेश कुमार के द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका रही।

मोखरा कॉलेज ने तब्जु को घोषित किया बेस्ट स्वयंसेविका

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मदवि के एनएसएस कॉऑर्डिनेटर प्रो. राजकुमार ने छात्राओं को मेहनत के लिए प्रेरित किया

हरिगुमि न्यूज महम

मोखरा के साक्षी मलिक राजकीय कन्या महाविद्यालय में लगाए सात दिवसीय एनएसएस शिविर का सोमवार को समापन हो गया। इस अवसर पर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के एनएसएस प्रोग्रामर डॉ. ऑर्डिनेटर प्रोफेसर राजकुमार बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। जबकि गवर्नमेंट कॉलेज बड़ोता के कार्यकारी प्रिंसिपल लोपटनेट अनिल कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। समापन समारोह की शुरुआत सरस्वती वंदना के साथ हुई। मोखरा गवर्नमेंट कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. सीमा जैन व मेहमानों ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रोफेसर राजकुमार ने एनएसएस



स्वयंसेविकाओं को जीवन में सफल होने और मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। कहा कि एनएसएस में शामिल होकर मेहनत करते हुए विद्यार्थी राष्ट्रपति अवांछित तक प्राप्त कर सकते हैं। लोपटनेट अनिल कुमार ने छात्राओं को एनसीसी का छात्र जीवन में महत्व विषय पर विस्तार से बताया। प्राचार्या डॉ. सीमा जैन ने कहा कि एनसीसी व एनएसएस के विद्यार्थियों की समाज के प्रति जवाबदारी है। छात्राओं ने गांव के दादा मालदे मंदिर में योग व प्राणायाम किया। गांव में

सफाई अभियान चलाया। छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बीए प्रथम वर्ष की छात्रा तमना को बेस्ट लीडर, बीए द्वितीय वर्ष की समीता को बेस्ट कैम्पर, तनु को बेस्ट स्वयंसेवक, परीक्षा को बेस्ट स्पीकर और ममता व मोनिका को बेस्ट परफॉर्मर घोषित किया गया। विजेता स्वयंसेविकाओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी सुरेश कुमार, सुनीता धनखड़, ईशर सिंह, रविंद्र कुमार, कृष्ण यादव, परमजीत व प्रभा मौजूद थे।

महम | एनएसएस शिविर के समापन अवसर पर मौजूद मोखरा गवर्नमेंट कॉलेज की एनएसएस स्वयंसेविकाएं व कॉलेज स्टाफ।

MEMBERS OF EDITORIAL BOARD



From L to R :

Dr. Vinod Kumar, Sh. Sandeep Kumar, Sh. Suresh Kumar, Dr. Seema Jain (Principal),
Smt. Sunita Dhankhar, Sh. Ishwar Singh, Sh. Krishan Yadav

From L to R (Student) :

Kumari Tamanna, Kumari Aarti, Kumari Manshi, Kumari Tushika, Kumari Anju

MEMBERS OF COLLEGE COUNCIL



Left to Right

Dr. Vinod Kumar, Sh. Sandeep Kumar, Sh. Suresh Kumar, Dr. Seema Jain (Principal),
Smt. Sunita Dhankhar, Sh. Ishwar Singh, Sh. Krishan Yadav

Standing Left to Right :

Sh. Parmjeet Malik, Sh. Ashish, Sh. Parveen Kumar, Sh. Sandeep Kumar, Smt. Prabha, Sh. Ravinder

(एम.डी.यू. द्वारा एफिलिएटेड)

साक्षी मलिक राजकीय कन्या महाविद्यालय मोखरा (रोहतक)

